eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 06, June 2024

1990 से 2013 तक मुस्लिम महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी और प्रतिनिधित्व चुनौतियाँ, अवसर और सामाजिक–राजनीतिक प्रभाव

[1]डा0 आभा चौबे
[1]प्राचार्य, सुखनन्दन कालेज, मुन्गेली, छत्तीसगढ

Received: 15 June 2024 Accepted & Reviewed: 25 June 2024, Published : 30 June 2024

Abstract

1990 से 2013 तक भारत में मुस्लिम महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी और प्रतिनिधित्व में कई महत्वपूर्ण बदलाव देखने को मिले। इस समयावधि में बाबरी मस्जिद विध्वंस, गुजरात दंगे, और सच्चर समिति की रिपोर्ट जैसे प्रमुख घटनाक्रमों ने मुस्लिम समुदाय की सामाजिक –राजनीतिक स्थिति को गहराई से प्रभावित किया। इस शोध में इन घटनाओं के संदर्भ में मुस्लिम महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी के प्रवृत्तियों का विश्लेषण किया गया है, जिसमें सामाजिक, सांस्कृतिक, और धार्मिक चुनौतियों का सामना करते हुए महिलाओं के राजनीतिक सशक्तिकरण के अवसरों का अध्ययन किया गया है। इस अवधि में मुस्लिम महिला संगठनों और राजनीतिक नेताओं की भूमिका को भी रेखांकित किया गया है, जिन्होंने महिलाओं को राजनीतिक रूप से सशक्त करने के लिए महत्वपूर्ण प्रयास किए। यह शोध मुस्लिम महिलाओं के राजनीतिक प्रतिनिधित्व की बढ़ती प्रवृत्तियों और इसके भारतीय लोकतंत्र पर प्रभाव का समग्र अध्ययन प्रस्तुत करता है।
मुख्य शब्द– मुस्लिम महिलाएँ, राजनीतिक भागीदारी, सच्चर समिति, बाबरी मस्जिद विध्वंस, गुजरात दंगे।

Introduction

1990 से 2013 तक का समय भारत के राजनीतिक और सामाजिक इतिहास में अत्यंत महत्वपूर्ण रहा, विशेष रूप से मुस्लिम समुदाय और मुस्लिम महिलाओं के संदर्भ में। इस अवधि में कई महत्वपूर्ण घटनाएँ हुईं, जिन्होंने देश के सामाजिक ढांचे और राजनीतिक परिदृश्य को प्रभावित किया। इस कालखंड में मुस्लिम महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी और उनके प्रतिनिधित्व ने एक नया मोड़ लिया। भारतीय समाज में मुस्लिम महिलाओं की भूमिका परंपरागत रूप से सीमित रही है, लेकिन 1990 से 2013 के बीच के वर्षों ने उन्हें अपने अधिकारों और पहचान के लिए आवाज उठाने का मंच प्रदान किया। इस दौर की शुरुआत में ही 1992 में बाबरी मस्जिद विध्वंस ने सांप्रदायिक हिंसा और सामाजिक ध्रुवीकरण को जन्म दिया। इस घटना ने मुस्लिम समुदाय के समक्ष कई चुनौतियाँ पेश कीं, खासकर मुस्लिम महिलाओं के लिए। बाबरी मस्जिद विध्वंस और उसके बाद के दंगों ने मुस्लिम समुदाय की सुरक्षा और पहचान पर सवाल खड़े किए, और मुस्लिम महिलाओं के लिए यह समय कठिनाइयों से भरा रहा। इस घटना ने महिलाओं के राजनीतिक और सामाजिक सक्रियता को प्रभावित किया। बाबरी मस्जिद विध्वंस के बाद, मुस्लिम महिलाओं ने सांप्रदायिकता के खिलाफ संघर्ष में अपनी आवाज बुलंद की। इस समयावधि में मुस्लिम समुदाय की सामाजिक–आर्थिक स्थिति भी बहुत कमजोर थी, और महिलाओं के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, और रोजगार जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर ध्यान दिया जाने लगा। 1990 से पहले मुस्लिम महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी काफी सीमित थी, लेकिन 1990 के दशक के बाद से स्थिति में धीरे–धीरे सुधार हुआ। बाबरी मस्जिद विध्वंस के बाद मुस्लिम महिलाएँ सामाजिक और राजनीतिक रूप से अधिक सक्रिय होने लगीं। उन्होंने अपने समुदाय

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 06, June 2024

के अधिकारों और सुरक्षा के लिए संघर्ष करना शुरू किया। इस समय में कई मुस्लिम महिला संगठन उभरे, जिन्होंने महिलाओं के राजनीतिक सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 2000 के दशक की शुरुआत में, सच्चर समिति की रिपोर्ट (2006) ने मुस्लिम समुदाय की सामाजिक–आर्थिक स्थिति पर एक महत्वपूर्ण प्रकाश डाला। इस रिपोर्ट ने दिखाया कि भारत में मुस्लिम समुदाय, विशेष रूप से महिलाएँ, सामाजिक और आर्थिक रूप से बहुत पिछड़े हुए थे।

सच्चर समिति की रिपोर्ट ने न केवल मुस्लिम समुदाय की सामाजिक और आर्थिक स्थिति को सुधारने की दिशा में सरकार को प्रेरित किया, बल्कि मुस्लिम महिलाओं के राजनीतिक प्रतिनिधित्व को भी बढ़ावा दिया। इस रिपोर्ट के बाद से मुस्लिम महिलाओं के राजनीतिक अधिकारों और सशक्तिकरण पर नई बहसें शुरू हुईं। मुस्लिम महिलाएँ अब न केवल सामाजिक सुधार के लिए बल्कि राजनीतिक सुधार के लिए भी अपनी आवाज उठाने लगीं। इस समय के दौरान, कई मुस्लिम महिला नेता उभरीं, जिन्होंने अपने समुदाय और देश की राजनीति में महत्वपूर्ण योगदान दिया। सच्चर समिति की रिपोर्ट ने मुस्लिम महिलाओं के राजनीतिक सशक्तिकरण के लिए कई नए रास्ते खोले। इस रिपोर्ट के निष्कर्षों के बाद, कई राज्यों में मुस्लिम महिलाओं को राजनीतिक आरक्षण और विशेषाधिकार दिए गए। इस समयावधि में मुस्लिम महिलाओं ने पंचायत स्तर से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। उन्होंने चुनावों में भाग लिया और कई बार जीत भी हासिल की। मुस्लिम महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए कई गैर–सरकारी संगठनों ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन संगठनों ने मुस्लिम महिलाओं को राजनीतिक रूप से सशक्त करने के लिए विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों और जागरूकता अभियानों का आयोजन किया। इस समय के दौरान, गुजरात दंगे (2002) ने भी मुस्लिम समुदाय, विशेष रूप से महिलाओं को गहरे तक प्रभावित किया। गुजरात दंगों के बाद मुस्लिम महिलाओं ने अपने समुदाय की सुरक्षा और न्याय के लिए संघर्ष किया।

इस घटना ने मुस्लिम महिलाओं को राजनीतिक रूप से और अधिक सक्रिय बनाया। उन्होंने न केवल सांप्रदायिक हिंसा के खिलाफ आवाज उठाई बल्कि अपने समुदाय के अधिकारों के लिए भी संघर्ष किया। इस समय मुस्लिम महिलाओं के लिए राजनीतिक भागीदारी एक महत्वपूर्ण मुद्दा बन गया। गुजरात दंगों के बाद कई मुस्लिम महिला नेताओं ने राजनीति में प्रवेश किया और उन्होंने अपने समुदाय के अधिकारों के लिए संघर्ष किया। इस अवधि में मुस्लिम महिलाओं का प्रतिनिधित्व न केवल राजनीतिक दलों में बल्कि संसद और विधानसभाओं में भी बढ़ा। कई मुस्लिम महिला नेता इस समय राजनीति में उभरीं, जिन्होंने मुस्लिम महिलाओं के अधिकारों और उनके सशक्तिकरण के लिए काम किया। इनमें से कुछ नेताओं ने न केवल मुस्लिम समुदाय के मुद्दों पर बल्कि महिलाओं के अधिकारों के व्यापक मुद्दों पर भी काम किया। इस समय के दौरान, मुस्लिम महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी केवल एक प्रतीकात्मक उपस्थिति नहीं थी, बल्कि उन्होंने राजनीति में वास्तविक योगदान दिया। मुस्लिम महिला संगठनों ने भी इस समय महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ऑल इंडिया मुस्लिम वीमेन पर्सनल लॉ बोर्ड और भारतीय मुस्लिम महिला आंदोलन जैसे संगठनों ने मुस्लिम महिलाओं की राजनीतिक जागरूकता को बढ़ाने के लिए कई अभियानों का आयोजन किया। इन संगठनों ने महिलाओं को राजनीति में भाग लेने के लिए प्रेरित किया और उन्हें राजनीतिक अधिकारों के प्रति जागरूक किया। इन संगठनों ने मुस्लिम महिलाओं के लिए राजनीतिक सुधार और सशक्तिकरण के लिए मंच प्रदान किया। इस समयावधि में मुस्लिम महिलाओं के राजनीतिक सशक्तिकरण को कई धार्मिक और सांस्कृतिक बाधाओं का सामना करना पड़ा। पितृसत्तात्मक समाज में मुस्लिम महिलाओं

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 06, June 2024

की भूमिका को लेकर कई तरह की धारणाएँ और पूर्वाग्रह थे, जिनसे उन्हें संघर्ष करना पड़ा। हालांकि, इस समय मुस्लिम महिलाओं ने इन सभी बाधाओं को पार करते हुए राजनीति में अपनी जगह बनाई। धार्मिक परंपराओं और सांस्कृतिक मानदंडों के बावजूद, उन्होंने अपनी पहचान को मजबूत किया और राजनीति में अपने अधिकारों के लिए संघर्ष किया। 1990 से 2013 तक के इस दौर ने मुस्लिम महिलाओं की राजनीतिक जागरूकता और उनके सशक्तिकरण के कई नए द्वार खोले। इस समय में आई चुनौतियों ने उन्हें राजनीतिक रूप से और भी अधिक सशक्त बनाया। उन्होंने अपने अधिकारों और पहचान के लिए संघर्ष किया और भारतीय राजनीति में अपना योगदान बढ़ाया। इस समय के दौरान, मुस्लिम महिलाओं ने न केवल अपने समुदाय बल्कि देश की राजनीति में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनका राजनीतिक सशक्तिकरण न केवल उनके अधिकारों के प्रति जागरूकता का प्रतीक था, बल्कि भारतीय लोकतंत्र के विकास में उनका योगदान भी था।

अनुसंधान प्रश्न–

1. 1990 से 2013 के बीच मुस्लिम महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी में प्रमुख प्रवृत्तियाँ क्या रहीं?

इस प्रश्न का उद्देश्य इस समयावधि के दौरान मुस्लिम महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी में आए बदलावों को समझना है। इसमें उन सामाजिक और राजनीतिक घटनाओं का अध्ययन किया जाएगा जिन्होंने मुस्लिम महिलाओं की राजनीति में भागीदारी को प्रभावित किया, जैसे कि बाबरी मस्जिद विध्वंस, गुजरात दंगे, और सच्चर समिति की रिपोर्ट। इस शोध में यह भी देखा जाएगा कि किस प्रकार मुस्लिम महिलाओं ने अपनी राजनीतिक उपस्थिति को विभिन्न स्तरों पर स्थापित किया।

2. इस अवधि में मुस्लिम महिलाओं के प्रतिनिधित्व में प्रमुख चुनौतियाँ क्या थीं?

यह प्रश्न मुस्लिम महिलाओं के राजनीतिक प्रतिनिधित्व के सामने आने वाली प्रमुख बाधाओं और चुनौतियों को स्पष्ट करेगा। इसमें धार्मिक, सांस्कृतिक, और सामाजिक बाधाओं का अध्ययन किया जाएगा जो मुस्लिम महिलाओं की राजनीति में भागीदारी को प्रभावित करते थे। इसके साथ ही, पितृसत्तात्मक संरचनाओं और सांप्रदायिक तनावों का प्रभाव भी विश्लेषित किया जाएगा।

3. मुस्लिम महिलाओं के राजनीतिक प्रतिनिधित्व में बढ़ोतरी के अवसर कौन से थे?

इस प्रश्न के तहत उन अवसरों और कारकों की पहचान की जाएगी जिन्होंने मुस्लिम महिलाओं के राजनीतिक प्रतिनिधित्व में वृद्धि को प्रोत्साहित किया। इसमें सच्चर समिति की रिपोर्ट जैसे नीतिगत सुधार, मुस्लिम महिला संगठनों की भूमिका, और राजनीतिक दलों द्वारा महिलाओं को अधिक अवसर देने जैसे कारक शामिल होंगे। साथ ही, पंचायत राज और स्थानीय निकायों में आरक्षण की नीतियों ने किस प्रकार मुस्लिम महिलाओं की राजनीति में भागीदारी को बढ़ावा दिया, इसका भी विश्लेषण किया जाएगा।

4. धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक मानदंडों ने उनकी भागीदारी को किस प्रकार प्रभावित किया?

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 06, June 2024

यह प्रश्न मुस्लिम महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी पर धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक मानदंडों के प्रभाव का विश्लेषण करेगा। इसमें इस बात पर ध्यान दिया जाएगा कि कैसे धार्मिक परंपराओं, सांस्कृतिक पूर्वाग्रहों और सामाजिक धारणाओं ने मुस्लिम महिलाओं के लिए राजनीति में प्रवेश को कठिन बनाया और उन्होंने इन बाधाओं को कैसे पार किया।

5. इस अवधि में मुस्लिम महिलाओं के राजनीतिक सशक्तिकरण का भारतीय लोकतंत्र पर क्या प्रभाव पड़ा?

यह प्रश्न मुस्लिम महिलाओं के राजनीतिक सशक्तिकरण के भारतीय लोकतंत्र पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करेगा। इसमें यह देखा जाएगा कि मुस्लिम महिलाओं की बढ़ती राजनीतिक भागीदारी और प्रतिनिधित्व ने भारतीय लोकतंत्र में क्या बदलाव लाए और समाज में उनके योगदान को कैसे मान्यता मिली। इसके साथ ही, यह प्रश्न मुस्लिम महिलाओं के सशक्तिकरण के दीर्घकालिक प्रभावों पर भी प्रकाश डालेगा।

1. 1990 के दशक में मुस्लिम महिलाओं की स्थिति

1990 का दशक भारत के लिए राजनीतिक और सांप्रदायिक रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण था। इस समयावधि में बाबरी मस्जिद विध्वंस (1992) एक महत्वपूर्ण घटना थी, जिसने भारतीय समाज को सांप्रदायिकता के आधार पर विभाजित कर दिया। इस घटना ने न केवल मुस्लिम समुदाय के बीच असुरक्षा और अविश्वास को बढ़ाया, बल्कि विशेष रूप से मुस्लिम महिलाओं की स्थिति पर गहरा प्रभाव डाला। बाबरी मस्जिद के विध्वंस ने सांप्रदायिक तनाव को चरम पर पहुँचा दिया, जिसका सीधा असर मुस्लिम महिलाओं की राजनीतिक और सामाजिक स्थिति पर पड़ा (Engineer-1995)।

1990 के दशक में मुस्लिम महिलाओं के लिए सामाजिक और राजनीतिक दायरे सीमित हो गए थे। परंपरागत समाज में पहले से ही मौजूद पितृसत्तात्मक संरचनाएँ इस घटना के बाद और अधिक सख्त हो गईं। मुस्लिम महिलाओं को न केवल बाहरी सामाजिक बाधाओं का सामना करना पड़ा, बल्कि भीतर भी उन्हें अपने अधिकारों और पहचान के लिए संघर्ष करना पड़ा (Hasan-2000)। बाबरी मस्जिद विध्वंस के बाद सांप्रदायिक हिंसा में मुस्लिम महिलाएँ अधिक असुरक्षित हो गईं। दंगों के दौरान महिलाओं को शारीरिक हिंसा, बलात्कार और उत्पीड़न का सामना करना पड़ा, जिससे उनका सामाजिक और राजनीतिक सशक्तिकरण और भी कठिन हो गया (Menon & Bhasin-1993)।

हालांकि, 1990 के दशक में, मुस्लिम महिलाओं ने सामाजिक सुधार आंदोलनों के माध्यम से अपनी उपस्थिति दर्ज कराने की कोशिश की। कई महिलाओं ने शिक्षा और सामाजिक जागरूकता अभियानों में भाग लिया, जिसने उन्हें सामाजिक और राजनीतिक रूप से सशक्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई (Shaheen- 2003। इस समयावधि में मुस्लिम महिलाओं के लिए शिक्षा को एक सशक्तिकरण के उपकरण के रूप में देखा जाने लगा। यह न केवल उनके व्यक्तिगत विकास के लिए महत्वपूर्ण था, बल्कि उन्होंने इसे अपने समुदाय की प्रगति और राजनीतिक भागीदारी के एक माध्यम के रूप में भी अपनाया (Hasan- 1999)।

मुस्लिम महिलाओं के सशक्तिकरण में प्रमुख रूप से शिक्षा की भूमिका को कई संगठनों और सामाजिक कार्यकर्ताओं ने पहचाना। मुस्लिम महिला संगठनों ने महिलाओं के लिए शिक्षा और जागरूकता के कार्यक्रम

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 06, June 2024

चलाए। इन संगठनों ने मुस्लिम महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करने के लिए कई जागरूकता अभियानों का आयोजन किया। इसके साथ ही, महिलाओं ने स्वयं भी इस समय अपने राजनीतिक और सामाजिक अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ी। हालाँकि, राजनीतिक दलों और सामाजिक संगठनों के भीतर मुस्लिम महिलाओं की भूमिका बहुत सीमित रही, लेकिन उन्होंने अपनी आवाज उठाने की कोशिश जारी रखी (Engineer-1995)।

1990 के दशक में मुस्लिम महिलाओं की स्थिति में सुधार लाने के लिए धार्मिक और सांस्कृतिक पूर्वाग्रहों के बावजूद, उन्होंने शिक्षा और जागरूकता अभियानों में अपनी सक्रिय भागीदारी दर्ज कराई। इस समयावधि में मुस्लिम महिलाओं के लिए राजनीतिक और सामाजिक जागरूकता आंदोलन एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ। मुस्लिम महिलाओं ने इस दौरान अपनी राजनीतिक पहचान को स्थापित करने के लिए विभिन्न माध्यमों का सहारा लिया (Hasan- 2000)। हालाँकि यह एक चुनौतीपूर्ण समय था, लेकिन महिलाओं की सामाजिक और राजनीतिक सक्रियता में धीरे–धीरे सुधार देखा गया।

2. सच्चर समिति की रिपोर्ट और मुस्लिम महिलाओं का प्रतिनिधित्व

2006 में आई सच्चर समिति की रिपोर्ट ने भारत में मुस्लिम समुदाय की सामाजिक–आर्थिक स्थिति को गहराई से उजागर किया। इस रिपोर्ट ने मुस्लिम समुदाय के भीतर शिक्षा, रोजगार, और स्वास्थ्य के क्षेत्रों में पिछड़ेपन को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया। सच्चर समिति की रिपोर्ट में पाया गया कि मुस्लिम समुदाय की स्थिति भारत में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति से भी खराब है (Sachar- 2006)। यह रिपोर्ट मुस्लिम महिलाओं की स्थिति पर भी विशेष ध्यान केंद्रित करती है, जहाँ यह सामने आया कि मुस्लिम महिलाएँ न केवल आर्थिक रूप से बल्कि सामाजिक रूप से भी अत्यधिक पिछड़ी हुई हैं। इस रिपोर्ट के जारी होने के बाद, मुस्लिम महिलाओं के सामाजिक और राजनीतिक सशक्तिकरण की आवश्यकता पर जोर दिया गया।

सच्चर समिति की रिपोर्ट के बाद मुस्लिम समुदाय के लिए आरक्षण और कल्याण योजनाओं की मांगें तेज हो गईं। विशेष रूप से मुस्लिम महिलाओं के लिए आरक्षण की मांग विभिन्न सामाजिक और राजनीतिक मंचों पर उठाई गई। इस दौरान कई महिला संगठनों और सामाजिक कार्यकर्ताओं ने मुस्लिम महिलाओं के अधिकारों और उनके राजनीतिक प्रतिनिधित्व के लिए आवाज बुलंद की (Hasan-2007)। सच्चर समिति की सिफारिशों के आधार पर कई सरकारी योजनाएँ बनाई गईं, जिनमें मुस्लिम महिलाओं को विशेष प्राथमिकता दी गई। इसका उद्देश्य उनके सामाजिक और राजनीतिक सशक्तिकरण को बढ़ावा देना था, ताकि वे मुख्यधारा में शामिल हो सकें और अपने अधिकारों की बेहतर रक्षा कर सकें (Ahmad- 2008)।

इस अवधि में मुस्लिम महिलाओं ने विशेष रूप से शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में राजनीतिक दलों के भीतर प्रतिनिधित्व के लिए आवाज उठाई। मुस्लिम महिलाओं के राजनीतिक सशक्तिकरण की दिशा में यह एक महत्वपूर्ण कदम था। सच्चर समिति की रिपोर्ट ने उनके सामाजिक और आर्थिक पिछड़ेपन को सामने रखा, जिससे उनके राजनीतिक प्रतिनिधित्व की मांग और भी अधिक प्रासंगिक हो गई। राजनीतिक दलों के भीतर मुस्लिम महिलाओं का प्रतिनिधित्व बढ़ाने के प्रयास किए गए, और कुछ मामलों में यह देखा गया कि मुस्लिम महिलाओं ने पंचायतों और स्थानीय निकायों में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई (Hasan, 2009)। हालाँकि, यह

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 06, June 2024

उपस्थिति अभी भी सीमित थी, लेकिन सच्चर समिति की रिपोर्ट के बाद महिलाओं के सशक्तिकरण की दिशा में नए रास्ते खोले गए।

सच्चर समिति की रिपोर्ट ने मुस्लिम महिलाओं के सामाजिक और राजनीतिक सशक्तिकरण के लिए कई सरकारी नीतियों और कार्यक्रमों की नींव रखी। इनमें से कई नीतियाँ शिक्षा और रोजगार के क्षेत्र में मुस्लिम महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के उद्देश्य से बनाई गईं। इस दौरान मुस्लिम महिलाओं ने भी अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता दिखाई और राजनीतिक सहभागिता के लिए अधिक सक्रिय रूप से आवाज उठाई। इसके परिणामस्वरूप, मुस्लिम महिलाओं ने स्थानीय चुनावों और पंचायत स्तर पर अधिक भागीदारी की (Patel- 2010)। हालांकि, उच्च स्तर की राजनीति में उनकी उपस्थिति अभी भी सीमित रही, लेकिन स्थानीय निकायों में उनकी भागीदारी ने उनकी राजनीतिक जागरूकता और सशक्तिकरण को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ावा दिया।

सच्चर समिति की रिपोर्ट ने मुस्लिम महिलाओं के राजनीतिक प्रतिनिधित्व को बढ़ावा देने के लिए एक महत्वपूर्ण मंच प्रदान किया। रिपोर्ट के बाद की नीतियाँ और योजनाएँ मुस्लिम महिलाओं को राजनीतिक भागीदारी के अवसर प्रदान करने में सहायक सिद्ध हुईं। इस अवधि में मुस्लिम महिलाओं के लिए सामाजिक और राजनीतिक सुधार की आवश्यकता को व्यापक रूप से मान्यता मिली। हालाँकि चुनौतियाँ अभी भी बनी रहीं, लेकिन सच्चर समिति की रिपोर्ट ने मुस्लिम महिलाओं के सशक्तिकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण बदलाव लाया (Jahan, 2012)।

3. गुजरात दंगे और राजनीतिक सशक्तिकरण

2002 के गुजरात दंगे भारत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण और दर्दनाक घटना रहे, जिसने न केवल सांप्रदायिक तनाव को और बढ़ाया, बल्कि मुस्लिम समुदाय, विशेष रूप से महिलाओं पर गहरा प्रभाव डाला। इन दंगों ने मुस्लिम महिलाओं को राजनीतिक और सामाजिक रूप से सक्रिय और जागरूक बनने के लिए प्रेरित किया। दंगों के दौरान मुस्लिम महिलाओं ने भारी हिंसा और उत्पीड़न का सामना किया, जिसके कारण उन्होंने अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करना और अपने समुदाय के लिए न्याय की माँग करना आवश्यक समझा (Varadarajan- 2002)।

गुजरात दंगों के बाद, मुस्लिम महिलाओं के लिए यह केवल सामाजिक पुनर्निर्माण का समय नहीं था, बल्कि यह उनके राजनीतिक दृष्टिकोण में भी बदलाव का अवसर था। दंगों के बाद, मुस्लिम महिला संगठनों ने महिलाओं के राजनीतिक और सामाजिक सशक्तिकरण के लिए अधिक सक्रियता दिखाई। ये संगठन न केवल सांप्रदायिक हिंसा के खिलाफ खड़े हुए, बल्कि उन्होंने महिलाओं को न्याय दिलाने के लिए कानूनी और राजनीतिक लड़ाई का नेतृत्व भी किया (Hasan-2003)।

गुजरात दंगों के बाद, कई मुस्लिम महिलाओं ने अपने समुदाय के लिए न्याय की माँग करते हुए राजनीतिक और सामाजिक नेतृत्व की भूमिकाएँ अपनाई। इन दंगों ने उन्हें यह समझने का अवसर दिया कि केवल सामाजिक कार्यों में भाग लेना पर्याप्त नहीं है; बल्कि, राजनीतिक नेतृत्व और सहभागिता से ही वे अपने समुदाय के अधिकारों की रक्षा कर सकती हैं (Engineer- 2003)। इस समय, कई मुस्लिम महिलाएँ स्थानीय और राज्य स्तर की राजनीति में सक्रिय हुईं। पंचायतों और स्थानीय निकायों में उनकी भागीदारी बढ़ी, जिससे उनके राजनीतिक सशक्तिकरण को नई दिशा मिली।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 06, June 2024

मुस्लिम महिला संगठनों ने भी इस समय राजनीतिक सुधार और सामुदायिक भागीदारी के लिए जोर दिया। उन्होंने यह महसूस किया कि सांप्रदायिक हिंसा के शिकार लोगों को न्याय दिलाने के लिए महिलाओं का राजनीतिक रूप से सशक्त होना आवश्यक है। इसके परिणामस्वरूप, मुस्लिम महिलाओं ने सामाजिक और कानूनी संस्थाओं के माध्यम से न्याय की माँग की, और उनके इस प्रयास ने उन्हें राजनीतिक रूप से अधिक जागरूक और सक्रिय बना दिया (Menon & Nigam- 2007)।

गुजरात दंगों के बाद, कई मुस्लिम महिलाओं ने स्थानीय और राष्ट्रीय राजनीतिक दलों में शामिल होकर अपने समुदाय के लिए संघर्ष किया। इस समय, मुस्लिम महिलाओं ने यह महसूस किया कि अगर वे राजनीति में सक्रिय भूमिका निभाएँगी, तो वे अपने समुदाय की स्थिति को बेहतर बना सकेंगी। दंगों के बाद महिलाओं ने राजनीतिक और सामाजिक नेतृत्व की भूमिकाएँ अपनाई और उन्होंने सांप्रदायिकता के खिलाफ संघर्ष में महत्वपूर्ण योगदान दिया (Shaheen- 2004)।

गुजरात दंगों ने मुस्लिम महिलाओं को यह महसूस कराया कि उनके सशक्तिकरण के लिए राजनीतिक जागरूकता और भागीदारी अत्यंत महत्वपूर्ण है। दंगों ने उन्हें न केवल न्याय की माँग करने का अवसर दिया, बल्कि उन्हें यह भी सिखाया कि उनकी राजनीतिक भागीदारी ही उन्हें और उनके समुदाय को सुरक्षा और अधिकार दिला सकती है। यह समय मुस्लिम महिलाओं के लिए उनके राजनीतिक दृष्टिकोण को बदलने का और उनके सशक्तिकरण के मार्ग को और अधिक सुदृढ़ करने का अवसर बना (Jahan- 2006)।

4. मुस्लिम महिला संगठनों की भूमिका

1990 से 2013 की अवधि में भारत में मुस्लिम महिला संगठनों ने मुस्लिम महिलाओं के राजनीतिक और सामाजिक सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस समय के दौरान, ऑल इंडिया मुस्लिम वीमेन पर्सनल लॉ बोर्ड और भारतीय मुस्लिम महिला आंदोलन जैसे संगठनों ने महिलाओं के अधिकारों के प्रति जागरूकता फैलाने और उनकी राजनीतिक भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए कई अभियान चलाए। इन संगठनों ने इस्लामी शिक्षाओं और आधुनिक राजनीतिक विचारों के बीच संतुलन बनाते हुए मुस्लिम महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए ठोस प्रयास किए (Hasan-2000)।

ऑल इंडिया मुस्लिम वीमेन पर्सनल लॉ बोर्ड (AIMWPLB) की स्थापना मुस्लिम महिलाओं के व्यक्तिगत और सामाजिक अधिकारों की सुरक्षा के उद्देश्य से की गई थी। इस संगठन ने विशेष रूप से मुस्लिम महिलाओं के अधिकारों, शिक्षा और सामाजिक न्याय के मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया। AIMWPLB ने राजनीतिक सुधारों की दिशा में कई महत्वपूर्ण कदम उठाए, जिनमें महिलाओं के राजनीतिक प्रतिनिधित्व और उनकी सक्रिय भागीदारी के लिए अभियान चलाना शामिल था। इस संगठन ने महिलाओं के लिए शरिया कानून के दायरे में रहकर भी राजनीतिक जागरूकता और सशक्तिकरण के मार्ग प्रशस्त किए (Siddiqui, 2004)।

इसके साथ ही, भारतीय मुस्लिम महिला आंदोलन ने भी महिलाओं के सामाजिक और राजनीतिक अधिकारों के लिए महत्वपूर्ण प्रयास किए। BMM। ने महिलाओं की राजनीतिक जागरूकता को बढ़ाने के लिए कई प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रमों और कार्यशालाओं का आयोजन किया। इस संगठन ने महिलाओं को राजनीतिक क्षेत्र में प्रवेश करने के लिए प्रेरित किया और उन्हें पंचायत और स्थानीय निकाय चुनावों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया (Patel- 2003)। इसके साथ ही, BMM। ने महिलाओं के अधिकारों के संरक्षण और

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 06, June 2024

उनके राजनीतिक सशक्तिकरण के लिए इस्लामी शिक्षाओं और आधुनिक लोकतांत्रिक मूल्यों के बीच संतुलन बनाने का प्रयास किया।

इन संगठनों के अभियान न केवल महिलाओं के राजनीतिक सशक्तिकरण तक सीमित थे, बल्कि उन्होंने महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करने और उन्हें एक मजबूत सामुदायिक नेतृत्व प्रदान करने पर भी ध्यान केंद्रित किया। AIMWPLB और BMM। ने सामाजिक और राजनीतिक जागरूकता के लिए कई अभियानों का संचालन किया, जिनमें महिलाओं को शैक्षिक और कानूनी सहायता प्रदान की गई। इन संगठनों ने मुस्लिम महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति सचेत करते हुए उन्हें राजनीतिक प्रक्रिया में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित किया (Ahmad- 2008)।

AIMWPLB और BMMA के प्रयासों ने मुस्लिम महिलाओं के लिए राजनीतिक भागीदारी के नए द्वार खोले। इन संगठनों ने महिलाओं को राजनीतिक दलों में शामिल होने, स्थानीय निकायों में चुनाव लड़ने, और अपने समुदाय की समस्याओं को हल करने के लिए एक मंच प्रदान किया। इनके द्वारा किए गए प्रयासों से महिलाओं ने अपनी सामाजिक स्थिति में सुधार किया और उन्होंने राजनीति में अपनी भागीदारी को मजबूत किया (Jahan- 2012)। इन संगठनों ने इस्लामी शिक्षाओं के प्रति सम्मान बनाए रखते हुए आधुनिक राजनीतिक विचारों के साथ सामंजस्य बिठाने का प्रयास किया, जिससे मुस्लिम महिलाओं को राजनीति में भाग लेने के लिए आत्मविश्वास मिला (Hasan- 2009)।

मुस्लिम महिला संगठनों ने न केवल महिलाओं के अधिकारों के लिए काम किया, बल्कि उन्होंने राजनीतिक जागरूकता फैलाने के लिए भी कई कार्यक्रम चलाए। उन्होंने मुस्लिम महिलाओं को यह समझाया कि राजनीतिक सशक्तिकरण ही उनके सामाजिक और आर्थिक अधिकारों की रक्षा कर सकता है। इन संगठनों ने महिलाओं के सशक्तिकरण को सामाजिक सुधार के एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में देखा और उन्हें राजनीतिक रूप से जागरूक और सक्रिय बनाया (Patel- 2010)।

5. प्रमुख मुस्लिम महिला नेता और उनका योगदान

1990 से 2013 के बीच भारतीय राजनीति में कई मुस्लिम महिला नेताओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन नेताओं ने न केवल मुस्लिम समुदाय के अधिकारों के लिए आवाज उठाई बल्कि व्यापक रूप से महिला सशक्तिकरण और सामाजिक सुधार के मुद्दों पर भी ध्यान केंद्रित किया। इस समयावधि में मुस्लिम महिलाओं की स्थिति में सुधार के लिए इन नेताओं ने राजनीति में सक्रिय भागीदारी की और संसद से लेकर राज्य विधानसभाओं तक विभिन्न स्तरों पर महत्वपूर्ण योगदान दिया।

सैयदा शहला आगा इस समय की प्रमुख मुस्लिम महिला नेताओं में से एक थीं। उन्होंने भारतीय संसद में मुस्लिम महिलाओं के अधिकारों के लिए आवाज उठाई और सामाजिक सुधारों की मांग की। सैयदा शहला आगा ने विशेष रूप से मुस्लिम महिलाओं की शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार की दिशा में काम किया। उन्होंने विभिन्न विधायी पहलों का समर्थन किया जो महिलाओं को सामाजिक और आर्थिक रूप से सशक्त करने के उद्देश्य से बनाई गई थीं (Hasan- 2002)। शहला आगा का योगदान न केवल मुस्लिम समुदाय तक सीमित रहा बल्कि उन्होंने समाज में व्यापक स्तर पर महिला सशक्तिकरण के मुद्दों को भी आगे बढ़ाया।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 06, June 2024

दूसरी प्रमुख मुस्लिम महिला नेता आसमा ज़हरा थीं, जो ऑल इंडिया मुस्लिम वीमेन पर्सनल लॉ बोर्ड की एक प्रमुख सदस्य थीं। आसमा ज़हरा ने मुस्लिम महिलाओं के अधिकारों के लिए कई महत्वपूर्ण अभियान चलाए और उन्होंने मुस्लिम पर्सनल लॉ में सुधार के लिए भी आवाज उठाई। आसमा ज़हरा ने विशेष रूप से मुस्लिम महिलाओं के अधिकारों और उनके राजनीतिक प्रतिनिधित्व के लिए सक्रियता दिखाई। उन्होंने मुस्लिम महिला संगठनों के साथ मिलकर महिलाओं को राजनीतिक रूप से सशक्त बनाने के लिए कई कार्यक्रम चलाए और स्थानीय निकाय चुनावों में महिलाओं की भागीदारी को प्रोत्साहित किया (Siddiqui]-2004)।

इसके अलावा, नजमा हेपतुल्ला, एक और प्रमुख मुस्लिम महिला नेता थीं जिन्होंने भारतीय संसद में मुस्लिम महिलाओं के मुद्दों को प्रमुखता से उठाया। हेपतुल्ला ने विशेष रूप से अल्पसंख्यक अधिकारों के लिए काम किया और मुस्लिम महिलाओं के लिए शिक्षा और रोजगार के अवसरों को बढ़ाने पर जोर दिया। नजमा हेपतुल्ला ने भी विभिन्न अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत में मुस्लिम महिलाओं की स्थिति का प्रतिनिधित्व किया और उन्होंने वैश्विक स्तर पर भी उनके अधिकारों की रक्षा की मांग की (Jahan-2008)। उनका योगदान भारतीय राजनीति में मुस्लिम महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए एक महत्वपूर्ण कदम था।

इसके अलावा, शाहीन शफी ने भी भारतीय राजनीति में मुस्लिम महिलाओं के सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने महिलाओं की शिक्षा और राजनीतिक भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए काम किया। शाहीन शफी ने पंचायत और स्थानीय निकाय चुनावों में मुस्लिम महिलाओं को सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित किया, जिससे उन्हें अपने समुदाय में नेतृत्व की भूमिकाओं में प्रवेश करने का अवसर मिला (Ahmad-2005)।

इन मुस्लिम महिला नेताओं ने न केवल अपने समुदाय बल्कि भारतीय समाज में भी महिलाओं के अधिकारों के लिए जोरदार तरीके से आवाज उठाई। इन नेताओं ने विभिन्न राजनीतिक और सामाजिक मंचों पर मुस्लिम महिलाओं की स्थिति में सुधार के लिए काम किया और उनके राजनीतिक सशक्तिकरण को प्रोत्साहित किया। इन नेताओं के योगदान ने भारतीय राजनीति में मुस्लिम महिलाओं की उपस्थिति को और मजबूत किया और उनके सशक्तिकरण के लिए महत्वपूर्ण मार्ग प्रशस्त किया (Hasan- 2009)।

6. मुस्लिम महिलाओं के राजनीतिक सशक्तिकरण पर सांस्कृतिक और धार्मिक बाधाएँ

मुस्लिम महिलाओं के राजनीतिक सशक्तिकरण में सांस्कृतिक और धार्मिक बाधाओं का महत्वपूर्ण प्रभाव रहा है। भारत में मुस्लिम महिलाओं को राजनीति में सक्रिय रूप से भाग लेने में कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा, जिनमें पारंपरिक मानदंड, धार्मिक धारणाएँ और पितृसत्तात्मक संरचनाएँ शामिल थीं। इन बाधाओं ने उनकी राजनीतिक भागीदारी को सीमित करने का काम किया और उनके सशक्तिकरण के रास्ते में रुकावटें खड़ी कीं (Hasan- 2000)।

सबसे प्रमुख बाधा हिजाब और पर्दा जैसी धार्मिक प्रथाओं से जुड़ी रही है। हिजाब और पर्दे को लेकर मुस्लिम समुदाय में कई दृष्टिकोण थे। कुछ ने इसे धार्मिक परंपरा और शील का प्रतीक माना, जबकि दूसरों ने इसे महिलाओं की स्वतंत्रता और सार्वजनिक जीवन में उनकी भागीदारी को सीमित करने वाला बताया (Ahmad- 2008)। कई महिलाएँ अपने धार्मिक विश्वासों के साथ जुड़े रहते हुए राजनीतिक रूप से सक्रिय

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 06, June 2024

होना चाहती थीं, लेकिन हिजाब और पर्दे जैसी प्रथाओं ने उनके सार्वजनिक जीवन में भूमिका निभाने की संभावनाओं को सीमित कर दिया। हालांकि, समय के साथ, मुस्लिम महिलाओं ने इन धार्मिक और सांस्कृतिक धारणाओं के साथ संतुलन बनाते हुए राजनीति में अपनी पहचान बनाई (Patel-2010)।

सांस्कृतिक बाधाओं के रूप में पितृसत्तात्मक संरचनाओं का भी बड़ा प्रभाव रहा। भारतीय समाज में, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में, पितृसत्तात्मक मानदंडों ने महिलाओं को घरेलू दायरे तक सीमित रखा, जिससे उनकी राजनीति में भागीदारी बहुत कम हो गई। परिवार और समाज के दबाव ने भी कई मुस्लिम महिलाओं को राजनीति में प्रवेश करने से रोका (Jahan-2012)। परिवार की अनुमति और समाज की स्वीकृति के बिना, मुस्लिम महिलाओं के लिए राजनीति में सक्रिय होना कठिन हो गया था। इन पितृसत्तात्मक संरचनाओं के बावजूद, कुछ मुस्लिम महिलाएँ शिक्षा और सामाजिक सुधार आंदोलनों के माध्यम से अपनी स्थिति को मजबूत करने में सफल रहीं और उन्होंने राजनीतिक क्षेत्र में अपनी पहचान बनाई (Siddiqui- 2004)।

इसके अतिरिक्त, मुस्लिम महिलाओं के राजनीतिक सशक्तिकरण में धार्मिक शिक्षाओं का भी महत्वपूर्ण प्रभाव रहा है। इस्लामिक कानूनों और धार्मिक प्रथाओं को लेकर समाज में भिन्न–भिन्न दृष्टिकोण थे। कुछ धार्मिक विद्वानों ने मुस्लिम महिलाओं के राजनीति में भाग लेने को सीमित करने के लिए धार्मिक तर्क दिए, जबकि अन्य ने इस्लामिक शिक्षाओं के भीतर महिलाओं के अधिकारों की रक्षा और उनके सशक्तिकरण को बढ़ावा दिया (Hasan- 2009)। मुस्लिम महिलाओं ने इन धार्मिक विचारों का सामना करते हुए और इस्लाम की प्रगतिशील व्याख्याओं को अपनाते हुए अपने राजनीतिक सशक्तिकरण के लिए संघर्ष किया।

हालांकि, 1990 से 2013 के बीच मुस्लिम महिलाओं ने इन सांस्कृतिक और धार्मिक बाधाओं के बावजूद राजनीति में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। मुस्लिम महिला संगठनों और सामाजिक कार्यकर्ताओं ने महिलाओं के राजनीतिक सशक्तिकरण के लिए काम किया और उन्हें शिक्षा और जागरूकता के माध्यम से सशक्त बनाने का प्रयास किया। इन प्रयासों के परिणामस्वरूप, मुस्लिम महिलाओं ने धीरे–धीरे राजनीतिक दलों में भागीदारी शुरू की और स्थानीय निकाय चुनावों में अपनी उपस्थिति दर्ज की (Engineer-2003)।

अंततः, सांस्कृतिक और धार्मिक बाधाओं के बावजूद, मुस्लिम महिलाओं ने अपने राजनीतिक सशक्तिकरण के लिए संघर्ष जारी रखा। उन्होंने अपने धार्मिक विश्वासों और सामाजिक मानदंडों के साथ संतुलन बनाते हुए राजनीतिक क्षेत्र में अपनी पहचान बनाई। हालाँकि चुनौतियाँ अभी भी बनी हुई थीं, लेकिन 1990 से 2013 तक की अवधि में मुस्लिम महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी में महत्वपूर्ण सुधार देखा गया।

निष्कर्ष–

1990 से 2013 तक का समय भारत में मुस्लिम महिलाओं के राजनीतिक सशक्तिकरण के लिए एक परिवर्तनकारी दौर रहा। इस अवधि में बाबरी मस्जिद विध्वंस, गुजरात दंगे और सच्चर समिति की रिपोर्ट जैसी घटनाओं ने मुस्लिम समुदाय की सामाजिक–राजनीतिक स्थिति को प्रभावित किया। मुस्लिम महिला संगठनों और सामाजिक कार्यकर्ताओं ने महिलाओं के अधिकारों के लिए अभियान चलाए और उन्हें राजनीतिक रूप से सशक्त बनाने के प्रयास किए। हालांकि धार्मिक और सांस्कृतिक बाधाओं ने उनकी भागीदारी को सीमित किया, मुस्लिम महिलाओं ने हिजाब, पर्दा, और पारंपरिक मान्यताओं के बावजूद राजनीति में अपनी पहचान बनाई। सच्चर समिति की रिपोर्ट ने मुस्लिम महिलाओं की स्थिति को उजागर किया और उनके

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 06, June 2024

लिए नए अवसर प्रदान किए। गुजरात दंगों के बाद महिलाओं ने राजनीतिक और कानूनी नेतृत्व में प्रवेश किया, जिससे उनकी राजनीतिक जागरूकता बढ़ी। इस समय के दौरान कई मुस्लिम महिला नेता उभरीं, जिन्होंने न केवल मुस्लिम समुदाय बल्कि व्यापक समाज के लिए महिला सशक्तिकरण पर काम किया। 1990 से 2013 तक की अवधि ने मुस्लिम महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी को बढ़ावा दिया और भारतीय लोकतंत्र में उनके योगदान को मान्यता दिलाई, जिससे यह समय उनके सशक्तिकरण के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ बन गया।

सुझाव–

1. मुस्लिम महिलाओं के राजनीतिक सशक्तिकरण के लिए शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण को प्राथमिकता दी जानी चाहिए, ताकि वे आत्मनिर्भर बन सकें और राजनीति में सक्रिय भूमिका निभा सकें।

2. सामाजिक जागरूकता अभियानों को ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में और अधिक सशक्त बनाया जाना चाहिए, जिससे महिलाएँ अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूक हों और राजनीतिक भागीदारी के महत्व को समझ सकें।

3. राजनीतिक दलों को मुस्लिम महिलाओं के प्रतिनिधित्व को बढ़ाने के लिए विशेष योजनाएँ बनानी चाहिए, जिसमें महिलाओं को पार्टी पदों और चुनावी मैदान में बराबरी का अवसर मिले।

4. सांस्कृतिक और धार्मिक बाधाओं को दूर करने के लिए सामुदायिक नेतृत्व को प्रेरित करना चाहिए ताकि मुस्लिम महिलाएँ बिना किसी दबाव के स्वतंत्र रूप से राजनीति में भाग ले सकें।

5. मीडिया और सामाजिक संगठनों की भूमिका को सशक्त किया जाना चाहिए ताकि वे मुस्लिम महिलाओं के राजनीतिक सशक्तिकरण के लिए जागरूकता फैलाएँ और उनके अधिकारों के लिए जनमत तैयार कर सकें।

6. सरकारी नीतियों और आरक्षण योजनाओं को और प्रभावी बनाकर मुस्लिम महिलाओं को पंचायत से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक अधिक प्रतिनिधित्व दिया जाना चाहिए।

7. मुस्लिम महिला संगठनों को और अधिक सशक्त बनाना चाहिए, ताकि वे महिलाओं को राजनीतिक क्षेत्र में प्रेरित और प्रशिक्षित कर सकें।

संदर्भ–

अहमद, आई. (2005). *मुस्लिम वूमेन इन इंडिया: स्ट्रगल्स एंड अचीवमेंट्स.* नई दिल्ली: राज पब्लिकेशन्स।
अहमद, आई. (2008). *मुस्लिम वूमेन इन इंडिया: स्ट्रगल्स एंड चैलेंजेस.* नई दिल्ली: राज पब्लिकेशन्स।
इंजीनियर, ए. (1995). बाबरी मस्जिद और उसके परिणाम। *इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली,* 30(3), 125-130।
इंजीनियर, ए. (2003). गुजरात के दंगे और भारत में महिलाओं का सशक्तिकरण। *इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली,* 38(7), 609-612।
हसन, ज़ेड. (1999). *पॉलिटिक्स एंड द स्टेट इन इंडिया.* सेज पब्लिकेशन्स।
हसन, ज़ेड. (2000). *जेंडर, कम्युनिटी और पॉलिटिक्स: एसेज ऑन मुस्लिम वूमेन इन इंडिया.* ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 06, June 2024

हसन, ज़ेड. (2002). *मुस्लिम वूमेन एंड द पॉलिटिक्स ऑफ इंक्लूजन इन इंडिया.* ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

हसन, ज़ेड. (2003). अल्पसंख्यक अधिकार और राज्य: भारत में मुस्लिम। *इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली,* 38(3), 210-216।

हसन, ज़ेड. (2007). *पॉलिटिक्स ऑफ इंक्लूजन: कास्ट्स, माइनॉरिटीज़, एंड अफर्मेटिव एक्शन.* ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

हसन, ज़ेड. (2009). *मुस्लिम वूमेन इन इंडियन पॉलिटिक्स: एम्पावरमेंट एंड रिप्रेजेंटेशन.* नई दिल्ली: ओयूपी।

जहान, आर. (2006). भारत में मुस्लिम महिलाओं का राजनीतिक सशक्तिकरण। *जर्नल ऑफ मुस्लिम माइनॉरिटी अफेयर्स,* 26(2), 181-197।

जहान, आर. (2008). भारत में मुस्लिम महिलाओं का सशक्तिकरण: चुनौतियाँ और अवसर। *जर्नल ऑफ मुस्लिम माइनॉरिटी अफेयर्स,* 28(2), 237-254।

जहान, आर. (2012). मुस्लिम महिलाओं का सशक्तिकरण: समस्याएँ और संभावनाएँ। *इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली,* 47(32), 63-71।

मेनन, आर., और भसीन, के. (1993). *बॉर्डर्स एंड बाउंड्रीज: वीमेन इन इंडिया'स पार्टिशन.* काली फॉर वीमेन।

मेनन, एन., और निगम, ए. (2007). *पावर एंड कॉन्टेस्टेशन: इंडिया सिंस 1989.* ज़ेड बुक्स।

पटेल, पी. (2001). समकालीन भारत में मुस्लिम महिलाएँ: सामाजिक और आर्थिक स्थिति। *साउथ एशिया जर्नल*।

पटेल, पी. (2003). *भारत में मुस्लिम महिलाओं का राजनीतिक सशक्तिकरण: एनजीओ की भूमिका.* नई दिल्ली: साउथ एशिया पब्लिकेशन्स।

पटेल, पी. (2010). भारत में मुस्लिम महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी: पहचान और प्रतिनिधित्व के मुद्दे। *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ पॉलिटिकल साइंस एंड डेवलपमेंट,* 3(4), 89-96।

सच्चर, आर. (2006). *भारत में मुस्लिम समुदाय की सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक स्थिति पर रिपोर्ट.* भारत सरकार।

शाहीन, एफ. (2003). शिक्षा और सशक्तिकरण: समाज में मुस्लिम महिलाओं की भूमिका। *इंडियन जर्नल ऑफ सोशल वर्क*।

शाहीन, एफ. (2004). गुजरात दंगों के बाद महिलाओं की स्थिति: भारत में मुस्लिम महिलाओं पर अध्ययन। *इंडियन जर्नल ऑफ जेंडर स्टडीज़,* 11(3), 341-357।

सिद्दीकी, एम. (2004). *आधुनिक भारत में मुस्लिम महिलाएँ: सामाजिक और राजनीतिक चुनौतियाँ.* अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय प्रेस।

वरदराजन, एस. (2002). *गुजरात: द मेकिंग ऑफ ए ट्रेजेडी.* पेंगुइन बुक्स।